ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS:

जैन दर्शन मे लेश्या के भेद

डॉ. जुवेदा मिर्जा — एम.ए. पीच.डी. एसोसिट प्रोफेसर इतिहास विभाग राजकीय महाविद्यालय सीकर

डॉ. निधि जैन — एम.ए. पीच.डी. सहायक प्रोफेसर इतिहास विभाग एस.एस.जैन सुबोध कालेज, जयपुर

आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी कृति में लेश्या के भेदों का विवेचन किया है उनके अनुसार–लेश्या के तीन प्रकार हैं –

कर्म लेश्या, नोकर्म लेश्या और भाव लेश्या। दूसरी भाषा में कहें तो लेश्या के दो प्रकार हैं – पौद्गलिक लेश्या और चौतसिक लेश्या पौद्गलिक लेश्या के दो प्रकार है – कर्म लेश्या व नोकर्म लेश्या।''

''जीव–अजीव में आचार्य श्री ने लेश्या को दो भागों में विभक्त किया है भाव लेश्या व द्रव्य लेश्या। आत्मिक विचारों को भाव–लेश्या व उनके सहायक पुद्गलों को द्रव्य लेश्या कहा है।''1

जिसे हम इस प्रकार वर्गीकृत कर सकते है।

1. द्रव्य लेश्या – सहायक पुद्गल
2. भाव लेश्या – आत्मिक विचार व भाव।

लेश्या के उत्तराध्ययन में दो भेद मिलते है –

प्रशस्त लेश्या	अप्रशस्त लेश्या
(शुभ लेश्या)	(अशुभ लेश्या)
धर्म लेश्या	अधर्म लेश्या

लेश्या का व्यक्ति के भावों और विचारों के साथ गहरा संबंध है। शुद्ध भावों की लेश्या शुद्ध व अशुद्ध भावों की लेश्या अशुद्ध होती है। उत्तरज्झयणाणि में अध्याय 34 पूरा लेश्या पर आधारित है।

इसमें लेश्या के छः भागों में रंग के आधार पर वर्गीकृत किया है।
''किण्हा नीला य काऊ य तेऊ पम्हा तहेव च।

सुक्कलेसा य छट्ठा उ नामाइं तु जहक्कमं।।

यथाक्रम से लेश्याओं के ये नाम हैं – कृष्ण, नील, कापोत, तेज, पद्म, शुक्ल।

'उत्तरज्झयणाणि के अध्याय 34 में लेश्या को नाम, वर्ण, रस, गंध, स्पर्श, परिणाम, लक्षण, स्थान आदि के द्वारा समझाया गया है।''

आचार्य श्री ने जीव–अजीव में लेश्या को छः भागों में समझाया है''–

(1) **कृष्ण लेश्याः**– काजल के समान कृष्ण और नीम से अनन्तगुणा कटु पुद्गलों के संबंध में आत्मा में जो परिणाम होते है, वह कृष्ण लेश्या है।
लक्षणः– मानसिक, वाचिक, एवं कायिक क्रियाओं में असंयम रखना, बिना सोचे–समझे काम करना, क्रूर व्यवहार करना आदि कृष्ण लेश्या के लक्षण हैं।
(2) **नील लेश्याः**– नीलम के समान नीले और सौंठ से अनन्तगुणा तीक्ष्ण पुद्गल के संबंध से आत्मा में जो परिणाम होता है वह नील लेश्या है।
लक्षणः– कपट करना, निर्लज्ज होना, स्वाद–लोलुप होना, आदि नील लेश्या के परिणाम हैं।
(3) **कापोत लेश्याः**– कबुतर के गले के समान वर्ण वाले व कच्चे आम के रस से अनन्तगुणा कषैले पुद्गलों के संबंध में आत्मा में जो परिणाम होता है वह कापोत लेश्या है।
लक्षणः– कार्य करने व बोलने में वक्रता रखना, दूसरों को कष्ट देने वाली भाषा बोलना आदि कापोत लेश्या के लक्षण हैं।
(4) **तेजोलेश्याः**– हिंगुल के समान रक्त और पके आमरस से अनन्तगुणा मधुर पुद्गलों के संयोग से आत्म परिणाम तेजोलेश्या है।

ठाणं में दो कल्प देवों को तेजोलेश्या युक्त माना गया है –

''दोसु कप्पेसु देवा तेउलेस्सा पण्णत्ता,
तं जहा सोहम्मे चेव, ईसाणे चेव।।''2

दो कल्प देव तेजोलेश्या युक्त होते हैं– सौधर्म में, ईशान में ।

लक्षणः– ममत्व से दूर रहना, धर्म पर रूचि रखना आदि।

(5) **पद्म लेश्याः**– हल्दी के समान पीले व सधु से अनन्तगुण मिष्ठ पुद्गलों के संयोग से आत्म परिणाम पद्म लेश्या है।

लक्षणः– क्रोध न करना, मितभाषी, इन्द्रिय–विजय करना इत्यादि।

(6) **शुक्ल लेश्याः**– शंख के समान श्वेत व मिसरी से अनन्तगुण मीठे पुद्गलों के संबंध से आत्म परिणाम शुक्ल लेश्या है।

लक्षणः– राग द्वेष रहित व आत्म लीन होना।

यद्यपि आत्मा का मूल स्वरूप स्वच्छ होता है। फिर भी संसारी आत्मा के कर्म पुद्गलों से आवृत होने के कारण आत्मा के स्वरूप में विकृति आ जाती है। सभी जीवों की अवस्थाएं समान नहीं होती। किसी में कम किसी में ज्यादा। इसी कर्मों की विकृति के न्यूनाधिकता के आधार पर इसे इन भागों में विभाजित किया गया है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने लेश्या जगत् को विचित्र बताते हुए कहा है कि प्रत्येक युग में सभी लेश्याएं रहती हैं मगर जिसका प्रभाव अधिक होता है उसी का प्रभाव समाज पर दृष्टिगोचर होने लग जाता है। उन्होंने लेश्या को ही युग परिवर्तन का कारण माना है। उनके अनुसार ''कभी युग आता है कृष्ण लेश्या का तो आतंकवाद व उग्रवाद पनपते हैं। कृष्णकर्म की प्रधानता हो जाती है। नील लेश्या, कापोत लेश्या थोड़ी मंद होती है तो इतनी उग्रता नहीं आती, शांति रहती है। किंतु जब तेजोलेश्या, पद्मलेश्या व शुक्ल लेश्या का विकास होता है तो सतयुग आता है। चारों और शांतिमय वातावरण होता है।''3

अतः यहां कहां जा सकता है कि लेश्याओं का प्रभाव सम्पूर्ण मानव जाती पर पड़ता है। लेश्या सभी युगों में होती है मगर जिस युग में जो लेश्या प्रधान होती है मानव पर उसी का प्रभाव अधिक नजर आता है मगर ऐसा नहीं है कि हम अपनी लेश्या परिवर्तित नहीं कर सकते आचार्य महाप्रज्ञ ने लेश्या की साधना को प्रयोग सहित अपनी कृत्ति'' प्रेक्षाध्यान, प्रयोग पद्धति के पृ. सं. 21 ''पर समझाया है। अगर साधक निरन्तर अपने मोक्ष व शांति के लक्ष्य को अपना केन्द्र बनाकर प्रयासरत रहे तो वह लेश्याओं में परिवर्तन ला सकता है। जो आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। सभी को लेश्या की जानकारी रखनी चाहिए ध्यान के साधकों को तो इसकी जानकारी विशेषरूप से रखनी चाहिए ताकि अशुभ लेश्या से बचा जा सके। मगर लेश्या के सिद्धान्त को समझ लिया जाए तो स्वयं व दूसरों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

सन्दर्भ :

1. आचार्य उमास्वामीः तत्वार्थसूत्र पृष्ठ 134
2. आचार्य पूज्यपाद सर्वाथसिद्धी पृष्ठ 185
3. प्राकृत साहित्य का इतिहा पृष्ठ 109 से 115